हरिभूमि लाइव

रायपुर, सोमवार 23 सितंबर 2024

Email id- zindgi.live.hb@gmail.com

0771- 4242222, Message at - 9630172937

02 सोनागाछी की मिट्टी से मां दुर्गा की मूर्ति ....

लाइव इवेंट

रेलवे कर्मचारियों ने वेस्ट मटेरियल प्रयोग कर बनाई उपयोगी चीजें

रायपुर। भारतीय रेलवे द्वारा इस वर्ष स्वच्छ भारत मिशन के 10वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में 'स्वभाव स्वच्छता-संस्कार स्वच्छता' थीम के साथ 'स्वच्छता ही सेवा' अभियान चलाया जा रहा है। इसी क्रम में दक्षिण-पूर्व मध्य रेलवे के सभी स्टेशन, रेलवे परिसर सहित पटरियों, कार्य क्षेत्रों तथा गाड़ियों में प्रत्येक दिवस थीम के अनुसार विभिन्न कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है। अभियान के छठवें दिन वेस्ट रिसायकल थीम पर स्वच्छता आधारित विभिन्न कार्यक्रम का आयोजन किया गया। रायपुर मंडल के स्टेशन में पर्यावरण संरक्षण और स्वच्छता के प्रति जागरूकता फैलाई गई। इसके अंतर्गत वेस्ट मटेरियल से बने मॉडल्स बनाए गए, जिसे रेल कर्मचारियों द्वारा वेस्ट मटेरियल का उपयोग करके स्वच्छता संबंधित संदेश देते हुए प्रदर्शित किया गया। स्टेशनों और रेल परिसरों की सफाई के साथ ही वेस्ट मटेरियल के सही प्रबंधन के लिए संदेश भी दिए गए।

प्लास्टिक, कागज धातु का दोबारा प्रयोग

इस कार्यक्रम के तहत रेलवे स्टेशन, रेल परिसरों और अन्य संबंधित क्षेत्रों में स्वच्छता अभियानों को बढ़ावा दिया जा रहा है। वेस्ट मटेरियल जैसे प्लास्टिक, कागज, धातु आदि को पुनः उपयोग, रीसाइकल करके विभिन्न उपयोगी वस्तुओं और मॉडलों के निर्माण के लिए प्रोत्साहित किया गया, जिससे कचरे को कम करने और स्वच्छता वातावरण बनाए रखने में मदद मिल सके। विद्यार्थियों में रचनात्मकता को प्रोत्साहित करने की भी कोशिश की गई। 23 सितंबरको रिसाइकिल प्रोडक्ट सेल थीम पर स्वच्छता आधारित कार्यक्रम आयोजित होंगे।

विश्व साइन लैंग्वेज डे आज : मूक-बधिर बच्चों ने हरिभूमि के लिए अपनी भाषा में कहा- हैप्पी साइन लैंग्वेज डे

मूक-बधिर बच्चों के मनोभाव को समझने मां-पिता भी सीख रहे साइन लैंग्वेज, इशारों की भाषा सीखने में 8 माह का वक्त

देश के विभिन्न राज्यों की 453 भाषाओं में साइन लैंग्वेज भी एक ऐसी भाषा है, जिसके जरिए भी व्यक्ति अपनी भावनाएं, प्यार, गुस्सा और अपनापन जाहिर कर सकता है। इस भाषा की खूबसूरती के साथ अपनी जटिलता है कि इसे बोलकर नहीं इशारों से कहा जाता है। विश्व में न सुन पाने वाले लोगों को शरीर के हाव-भाव से बातचीत करना सिखाने के लिए आज साइन लैंग्वेज डे मनाया जा रहा है। इस अवसर पर हरिभूमि मूक-बधिर के स्कूल कोपलवाणी पहुंची। यहां बच्चे अपने हाथों और चेहरे के हाव-भाव से आपस में बातचीत करते नजर आए।

रायपुर। शिक्षक बिना आवाज किए साइन लैंग्वेज के जरिए वीडियो कॉल से बातचीत करते दिखे। स्कूल में छत्तीसगढ़ के अलावा महाराष्ट्र, झारखंड, ओडिशा और मध्यप्रदेश के बच्चे भी सांकेतिक भाषा से शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। यहां पढ़ाई करने के बाद छात्र-छात्राएं साइन लैंग्वेज के जरिए मॉल, फ्लिपकार्ट, रिलायंस मार्ट, नुक्कड़ कैफे, टपरी कैफे आदि जगहों पर काम कर रहे हैं। कोपलवाणी स्कूल की संस्थापिका ने बताया कि मूक-बधिरों के लिए महानगर में कई स्कूल पहले से थे, लेकिन रायपुर में इसकी सुविधा नहीं थी। अक्सर मूक-बधिरों की दशा देखकर भावुक हो जाती थी। ऐसे बच्चों की मदद करने सांकेतिक भाषा सीखाने का संकल्प लिया। आज संस्था में 200 से अधिक बच्चे व युवक-युवतियां रहकर शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। पद्मा स्वयं उन्हें पढ़ाती हैं। उनका दर्द और मनोभाव को असानी से समझ लेती हैं।

बच्चों के साथ पालक भी सीख रहे साइन लैंग्वेज

आमतौर पर किसी भाषा को पूरी तरह से सीखने सालभर से अधिक समय लग जाता है, लेकिन साइन लैंग्वेज सीखना और भी आसान है। कोपलवाणी संस्थापिका ने बताया कि जब बच्चे स्कूल में प्रवेश लेते हैं, उन्हें साइन लैंग्वेज में बात करना नहीं आता। एक बच्चे को बेसिक लैंग्वेज सीखने में 7 से 8 महीने का समय लग जाता है। दूसरी भाषाओं की तरह साइन लैंग्वेज का भी अपना व्याकरण और नियम है। यह लैंग्वेज चेहरे के हाव-भाव से जुड़ा होने से एक सामान्य व्यक्ति को भी आसानी से सीख लेता है। बच्चों संग साइन लैंग्वेज सीखने पालक भी स्कूल पहुंचकर क्लास में शामिल हो रहे हैं। ताकि बच्चों की भावनाओं और उनसे बात करने में आसानी हो। आम आदमी मूक-बधिर के सांकेतिक भाषा को नहीं समझते हैं। इस वजह से बधिर लोगों का दैनिक संघर्ष और कठिन हो जाता है। संस्था की ओर से पुलिस, अस्पताल, स्कूल व कॉलेज में लैंग्वेज सीखा रहे हैं, ताकि वे मूक-बधिरों की मदद कर सकें।

पैरों से बातचीत और पेंटिंग भी

कोलवाणी में ऐसे भी शिक्षक हैं, जो मूक-बधिर होने के साथ पैरों से दिव्यांग हैं, लेकिन पैरों के माध्यम से उन्होंने सांकेतिक भाषा सीखी है। गौकरण पाटिल अपने पैरों से पेंटिंग बनाने और कंप्यूटर का प्रशिक्षण देते हैं। उनका कहना है कि सांकेतिक भाषा का एक प्रकार नहीं, यह तीन सौ तरह की होती है। इसलिए दिव्यांगों को समझना और उन्हें अपनी बात समझाना, किसी सामान्य व्यक्ति के लिए आसान नहीं होता है।

अपनी भाषा में बना रहे कॅरियर

स्कूल में साइन लैंग्वेज सीखने के बाद युवा उन जगहों पर काम कर रहे हैं, जहां सामान्य व्यक्ति काम करते हैं। शहर के विभिन्न क्षेत्रों में आज साइन लैंग्वेज के बदौलत कॅरियर बना रहे हैं। स्कूल के सभी बच्चे आपस में अपनी भाषा में बात करते हैं। शिक्षकों का कहना है कि एक से दो महीने में मूक-बधिर बच्चे अपनी भावनाओं को बताने की भाषा सीख लेते हैं। भाषा का पूरा ज्ञान देने के बाद उन्हें रोजगार भी देने का प्रयास किया जाता है।

स्वयं श्रवण बाधित, आज सीखा रही सांकेतिक भाषा

कोलवाणी में श्रवण बाधित आसिया बानो भी शिक्षिका हैं। वह सात वर्षों से अधिक विद्यालय में सेवा दे रही हैं। खास बात यह है कि आसिया ने अपनी स्कूल और कॉलेज की पढ़ाई सामान्य जगहों से की है। उनका कहना है कि बिना साइन लैंग्वेज की मदद से पढ़ाई करना कठिन था, लेकिन इसके वजह से पता चला कि मूक-बधिर के लिए साइन लैंग्वेज से जुड़े स्कूल और कॉलेज होने कितने जरूरी हैं। उनका कहना है कि इस समस्या पर विजय पाने के लिए उन्होंने सांकेतिक भाषा का ज्ञान प्राप्त किया।

सिटी इवेंट

ऋषि-मुनि का अनुसरण करते हुए स्वयं करें सत्य की खोज

रायपुर। विश्व नदी दिवस के अवसर पर नदी घाटी मोर्चा द्वारा लोकयन भवन में नदी जीवन पर एक महत्वपूर्ण विचार-विमर्श कार्यक्रम का आयोजन किया गया। यह आयोजन छत्तीसगढ़ की प्रमुख नदियों की स्थिति, पर्यावरणीय संकट, जलवायु परिवर्तन और नदियों के पुनर्जीवन पर केंद्रित रहा। कार्यक्रम का संचालन और आयोजन गौतम बंधोपाध्याय द्वारा किया गया, जिसमें प्रसिद्ध फिल्म मेकर अमीर हाशमी सहित प्रदेशभर से कई विशेषज्ञ, पर्यावरणविद और सामाजिक कार्यकर्ता शामिल हुए। इस कार्यक्रम में छत्तीसगढ़ की नदियों के संरक्षण से जुड़े विभिन्न गंभीर मुद्दों पर चर्चा की गई। विशेष रूप से खनिजों का गैर-वैज्ञानिक और अव्यवहारिक उत्खनन, रेत खनन, वनों की अंधाधुंध कटाई और नदी किनारे के क्षेत्रों में अवैध निर्माण एवं कब्जा जैसी समस्याओं को प्रमुखता से उठाया गया।

अत्यधिक सूचनाओं के बोझ से खुद को दूर करें

विशेष वक्ता अमीर हाशमी ने नदी पर्यावरण और जलवायु परिवर्तन पर विस्तार से अपने विचार साझा किए। उन्होंने लोगों से अपनी जीवनशैली में बदलाव लाने का आह्वान करते हुए कहा कि अत्यधिक सूचनाओं के बोझ से खुद को दूर कर हमें आत्मचिंतन और विचार करने की आवश्यकता है। अमीर हाशमी ने अपनी 'बोलती नदी यात्रा' का उल्लेख करते हुए बताया कि कैसे उन्होंने छत्तीसगढ़ की सकरी नदी को पुनर्जीवित करने का प्रयास किया। उन्होंने कहा कि जीवन में एक लक्ष्य को निर्धारित कर उसके प्रति गंभीरता से काम करना ही सफलता का मार्ग है। कार्यक्रम का उद्देश्य न केवल प्रदेश की नदियों के वर्तमान संकटों पर चर्चा करना था, बल्कि नदियों के संरक्षण और पुनरुद्धार हेतु एक विस्तृत योजना बनाना भी था। सभी ने इस बात पर सहमति जताई कि नदियों को पुनर्जीवित करने के लिए सामूहिक प्रयास की आवश्यकता है।

मुद्दों पर बिखराव से बचें

कार्यक्रम में वक्ताओं ने कहा कि हमारे देश के ऋषि-मुनि, कबीर साहब, गुरु नानक, महावीर और बुद्ध सत्य की खोज के लिए घर से बाहर निकले थे, वैसे ही हमें भी सत्य की तलाश में निकलना चाहिए। जो सूचनाएं हमें घर बैठे व्हाट्सएप, न्यूजचैनल, टीवी बहस इत्यादि से मिलती है, वह अक्सर भ्रमित होती है। सत्य की तलाश में हमें अपने ऋषियों का अनुसरण करना चाहिए। वास्तविक सत्य की खोज हमें खुद करनी होती है। उन्होंने समाज के विभिन्न मुद्दों पर बिखराव से बचने की सलाह दी।

जीवन में तीन काम जरूर करें- निर्धन कन्या की शादी जरूरतमंद का इलाज, उठाएं किसी की पढ़ाई का खर्च

रायपुर। सिंधी काउंसिल ऑफ इंडिया की छग इकाई एवं रामकृष्ण केयर हॉस्पिटल के संयुक्त तत्वाधान में निशुल्क स्वास्थ्य शिविर रखा गया। यहां 1016 मरीजों ने पहुंचकर अपना उपचार कराया। मुख्य अतिथि रायपुर सांसद बृजमोहन अग्रवाल ने कहा, अपने जीवन में इंसान को तीन काम जरूर करना चाहिए। इसमें किसी के बेटी की शादी, किसी जरूरतमंद का इलाज एवं एक बालक की पढ़ाई का खर्च उठाना शामिल है। इंसान को एक मूल मंत्र में काम करना चाहिए- मानव सेवा ही माधव सेवा है। कई तरह के टेस्ट यहां निशुल्क रहे। सभी आयु वर्ग के लोगों ने अपना इलाज कराया।

स्वास्थ्य और शिक्षा के क्षेत्र में आगे आए समाज

शदाणी दरबार तीर्थ के संत युधिष्ठिर लाल ने कहा, इंसान ही इंसान के काम आता है। बीजेपी प्रदेश महामंत्री संजय श्रीवास्तव, पूर्व सांसद सुनील सोनी, चैंबर अध्यक्ष अमर पारवानी सहित अन्य समाजगण शामिल रहे। अतिथियों ने कहा कि सभी समाज को स्वास्थ्य और शिक्षा के क्षेत्र में आगे आना चाहिए। टेस्ट करवाने के अलावा लोगों ने चिकित्सकों से निशुल्क परामर्श लिया। महेश दरयानी, ललित जैसिंघ, अमर गिदवानी, राम गिडलानी, रवि ग्वालानी सहित सिंधी समाज के अन्य नागरिक शामिल रहे।

महिलाएं समूह बनाकर करेंगी गौसेवा, पाक शाला के लिए दिया दान

रायपुर। रोटरी क्लब ऑफ रायपुर एलिगेंस द्वारा गौसेवा का संकल्प लिया गया है। इस कड़ी में संस्था की महिलाओं ने श्री सत्य साईं संजीवनी हॉस्पिटल की गौशाला में सेवा दी। क्लब कि सदस्यों ने मिलकर गौशाला के लिए चारा दान किया। इसके अलावा पाक शाला में 11 हजार रुपए का राशन भी दिया, जिससे कि वहां रह रहे मरीजों को भोजन सेवा में मदद मिल सके। अध्यक्ष मनीषा अग्रवाल, सचिव श्वेता शर्मा, कोषाध्यक्ष तनुश्री अग्रवाल, विनय अग्रवाल सहित क्लब के अनेक सदस्य शामिल हुए। सभी सदस्यों ने गुड़-चना और खिचड़ी खिलाकर गौसेवा की। महिला सदस्यों ने कहा कि गौशाला की हर संभव जरूरत के लिए क्लब द्वारा मदद की जाएगी। इसके अलावा समूह बनाकर गौसेवा की जाएगी।

'कल्लू कुकुर के पावर' में दिखता है त्योहारों संग व्यंग्य का ताना-बाना

रायपुर। हास्य और व्यंग्य का ऐसा ताना-बाना बहुत कम देखने को मिलता है। जिसमें तीज-त्योहारों को सरोकार से जोड़ते हुए बिना किसी राजनीतिक घटना का जिक्र किए व्यंग्य किया जाए। 'कल्लू कुकुर के पावर' किताब विमोचन के दौरान ये बातें पुस्तक प्रेमियों ने कह। लेखक विजय मिश्रा की इस किताब का विमोचन प्रेस क्लब में रविवार को हुआ, जहां बड़ी संख्या में साहित्यप्रेमी मौजूद रहे। व्यंग्यकार रामेश्वर वैष्णव, भाषाविद डॉ. चितरंजन कर सहित विशेष अतिथि के रूप में साहित्यकार गिरीश पंकज और डॉ. सुधीर शर्मा लोगों से मुखातिब हुए।

फूलों की जगह व्यंजनों की डलिया

किताब में 35 व्यंग्यों के संग्रह को जिस तरह से एक सूत्र में पिरोने का प्रयास किया गया, उसकी सभी ने सराहना की। पुस्तक विमोचन में मंचस्थ अतिथियों का स्वागत भी अनूठे अंदाज में किया गया। पुष्पगुच्छ की जगह पारंपरिक व्यंजनों की डलिया थमाई गई। इसके अलावा नारियल के साथ कलम दी गई। स्वागत का यह अनूठा प्रयोग पुस्तक विमोचन के दौरान चर्चा का विषय रहा। हर किसी ने ठेठरी, खुरमी, खाजा का स्वाद लेने के साथ हास्य व व्यंग्य के अनूठे प्रयोग को सराहा।

खादी महोत्सव : कश्मीर, तेलंगाना, बंगाल सहित देश के 24 राज्यों से जुटे

इस फेस्टिव सीजन ट्रेंड में रहेंगे खादी आउटफिट, इनमें भी पारंपरिक डिजाइन व रंग को तवज्जो, क्योंकि ये कभी नहीं होते फैशन से बाहर

कार्नर न्यूज

रायपुर। त्योहारों का क्रम प्रारंभ हो चुका है। इसे देखते हुए शहर में खादी महोत्सव का आयोजन किया गया है। इसमें डिजाइनर कपड़े, पर्स, जूती व सजावटी हैंडमेड वस्तुएं लाई गई हैं। विभिन्न राज्यों के अनुभवी कारीगरों द्वारा निर्मित कुशल शिल्प कला का प्रदर्शन स्टॉल में देखा जा सकता है। कश्मीर से लेकर मप्र, पंजाब, उत्तरप्रदेश, तेलंगाना, बंगाल, गुजरात व राजस्थान के व्यापारियों ने यहां शिरकत की है। देश के 24 राज्यों से व्यापारी यहां उपस्थित हैं। शहर स्थित ग्रास मेमोरियल ग्राउंड में खादी महोत्सव का आयोजन किया जा रहा है।

नवरात्रि के लिए जूती व चुड़ी

शम्सुद्दिन गौरी ने राजस्थान से डिजाइनर जूती, लॉक की चुड़ी व सजावटी वस्तुएं के साथ स्टॉल सजाई है। महिलाओं के लिए लॉक की चुड़ी मुख्य आकर्षण का केंद्र है, जिसमें अनेक डिजाइन व रंगों की चुड़ी शामिल है। स्टॉल संचालक ने बताया, दुकान में राजस्थानी डिजाइनर जूती उपलब्ध है। जिसकी कीमत 150-500 तक है। दुकान में नवरात्रि को ध्यान में रखते हुए चुड़ी, सजावटी वस्तुएं व जूती लाई गई है, जिसे श्रृंगार में शामिल किया जा सकता है।

स्वदेशी खादी महोत्सव के संचालक अनुराग मिश्रा ने बताया, शनिवार से आयोजित मेला एक माह निरतंर जारी रहेगा। यह आयोजन नवरात्रि व दशहरा के उपलक्ष्य में लगाया गया है। रविवार को सुबह से ही महोत्सव परिसर में खरीदारों की भीड़ देखने को मिली, जहां भारतीय पारंपरिक परिधान एवं हस्तशिल्प की खरीदी करते वे नजर आए। खादी महोत्सव में आकर्षण का केंद्र बिहार का भागलपुर कपड़ा, असम का मुगा सिल्क, बंगाली काथा सिल्क साड़ी, वाराणसी सिल्क साड़ी सहित अन्य पारंपरिक परिधान हैं। यहां 150 से अधिक स्टॉल सजाए गए हैं, प्रत्येक स्टॉल में सौ से अधिक डिजाइनर ड्रेस मौजूद है।

विदेशों में भी खादी की खरीदी

एक स्टॉल संचालक बाल मुकुंद कुशवाहा ने बताया, दुकान में हैंडलुम खादी से निर्मित कपड़ा मौजूद है। जिसे चादर, दरी, कंबल की तरह उपयोग किया जा सकता है। इसकी विशेषता यह है कि कपड़ा लंबे समय तक चलता है और खराब नहीं होता। प्रत्येक वर्ष देश-विदेश में इसकी बिक्री की जाती है, जिसमें 15-20 लाख से अधिक का मुनाफा होता है। एक कपड़े को तैयार करने में 4-5 दिन का वक्त लगाता है। इसे तैयार करने में 500 लोगों समूह निरंतर कार्य करता है।

मधुबनी प्रिंट और काथा वर्क

दुकान संचालक संजू पाल के स्टॉल में 100 से अधिक डिजाइन की साड़ी मौजूद है। जिसमें मधुबनी प्रिंट, विष्णुपुर से बालू चूड़ी प्रिंट, काथा वर्क, मीनाकारी वर्क, ब्लॉक प्रिंट, नीडल वर्क से तैयार हैंडलुम साड़ी शामिल है। नवरात्रि के अवसर पर टिशू सिल्क पर तैयार की गई डिजाइनर साड़ी लाई गई है। इसकी कीमत 500 रुपए से शुरु होकर 5 हजार तक है। प्रत्येक माह साड़ियों की डिमांड बनी रहती है, लेकिन पारंपरिक डिजाइन के प्रति खरीदारों का अधिक रुझान रहता है।